मैली चादर ओढ़ के कैसे .....

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ ।
हे पावन परमेश्वर ! मेरे, मन ही मन शरमाऊँ ।।
मैली चादर ओढ़ के ....

तूने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया ।
आकर के संसार में मैंने, इसमें दाग लगाया ।
जन्म–जन्म की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ ।।
मैली चादर ओढ़ के ....

इन पैरों से चलकर तेरे, मन्दिर कभी ना आया ।
जहाँ–जहाँ हो पूजा तेरी, कभी ना शीश नवाया ।
हे हरिहर ! मैं हार के आया, अब क्या हार पहनाऊँ ।।
मैली चादर ओढ़ के ....

निर्मल वाणी पाकर तुझसे, गीत ना तेरे गाया ।
नैन मूंद कर हे परमेश्वर ! कभी ना ध्यान लगाया ।
मन वीणा के तार हैं टूटे, अब क्या गीत सुनाऊँ ।।
मैली चादर ओढ़ के ....

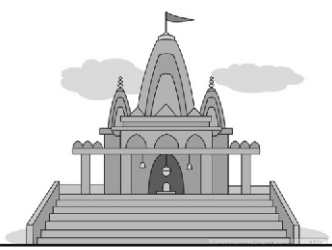

लेनलेन सब लेत है, देवो न किसको दोष।
अनुभवी नर कह गये, शान्ति में ही संतोष।।